भारतीय शिक्षा पद्धति और आचार्यश्री विद्यासागरजी के विचारों का विश्लेषणात्मक शोधपत्र

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर
(राष्ट्रपति सम्मानित)
संयुक्त मंत्री, अ.भा.दि. जैन शास्त्रि परिषद्

---

1. प्रस्तावनाः शिक्षा का मूल स्वरूप और उद्देश्यः एक व्युत्पत्तिपरक विवेचन

भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रहण नहीं , अपितु जीवन को परिष्कृत करने वाली एक निरंतर प्रक्रिया है। व्युत्पत्तिपरक दृष्टि से 'शिक्षा' शब्द संस्कृत की दो धातुओं से निष्पन्न हैः 'शिक्ष' (सीखना अथवा ज्ञान अर्जन करना) और 'शाक्ष' (अनुशासन में रखना अथवा निर्देशित करना)। यहाँ शाक्ष धातु का महत्व अत्यधिक है क्योंकि यह व्यक्ति के व्यवहार के 'परिमार्जन' (Refinement) की ओर संकेत करता है। इसी प्रकार 'विद्या' शब्द 'विद्' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है 'जानना'। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन में शिक्षा वही है जिसमें 'हित का सृजन और अहित का विसर्जन' हो। सम्यकज्ञान ही वह आधार है जो मनुष्य को पशु-वृत्ति से ऊपर उठाकर मानवता और अंततः मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

₹नाही ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिहविद्यते₹ अर्थात् इस संसार में ज्ञान के समान कुछ भी पवित्र नहीं है। ज्ञान मनुष्य का वह 'तृतीय नेत्र' है जो उसे आत्मिक सुख और शाश्वत शांति के पथ पर प्रतिष्ठित करता है।

2. भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यः साक्ष्यों का विश्लेषण

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली व्यावसायिक शक्ति और चारित्रिक सुदृढ़ता का अद्भुत संगम थी। ऐतिहासिक साक्ष्यों का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करता हैः

1. **प्राचीन विश्वविद्यालयों की व्यापकता:** तक्षशिला और नालंदा जैसे संस्थान न केवल अध्यात्म, अपितु इंजीनियरिंग (अभियांत्रिकी), चिकित्सा, आयुर्वेद, धातुविज्ञान (Metallurgy) और प्रबंधन (Management) जैसे व्यावहारिक विषयों के वैश्विक केंद्र थे।

2. **विलियम एडम की रिपोर्ट (1822):** ब्रिटिश अधिकारी विलियम एडम ने अपने भारत भ्रमण के पश्चात ब्रिटिश संसद को 117 पृष्ठों का एक विस्तृत प्रतिवेदन सौंपा था। इसमें स्पष्ट उल्लेख था कि भारत की अटूट व्यावसायिक समृद्धि का मूल आधार यहाँ की 'गुरुकुल प्रणाली' ही है।

3. **पैडरगास्ट के दस्तावेज:** पैडरगास्ट के अनुसार, प्राचीन भारत में प्रत्येक विशिष्ट विधा (जैसे तकनीकी और प्रबंधन) के लिए पृथक विद्यालयों का एक सघन जाल बिछा हुआ था।

4. **गुरुकुल पद्धति:** यहाँ शिक्षा वृक्षों के सान्निध्य में प्राप्त की जाती थी, जहाँ लेखन की तुलना में 'प्रयोग' (Practical) और 'श्रवण' (Listening) की परंपरा मुख्य थी।

3. वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सीमाएं और चुनौतियां

आचार्यश्री के दृष्टिकोण में आधुनिक शिक्षा अपनी जड़ों से कटकर 'प्रर्दशन' (Standard) की वस्तु बन गई है, जबकि इसे 'दर्शन' (Sanskar) का विषय होना चाहिए था। वर्तमान संकट का विश्लेषणात्मक विवरण इस तालिका में प्रस्तुत है:

वर्तमान शिक्षा की समस्या	आचार्यश्री का विश्लेषण/चेतावनी
90 प्रतिशत की होड़	आज दृष्टि केवल 'पैसे' (Value/Price) पर है, 'वस्तु' (Reality) पर नहीं। यह केवल अंकों की दौड़ है, जीवन के मूल्यांकन की नहीं।
व्यवसायीकरण	शिक्षा और चिकित्सा सेवा के क्षेत्र थे, अब व्यवसाय बन गए हैं। यह 'अर्थकारी' तो हो सकते हैं, पर 'परमार्थकारी' नहीं।

विदेशी नकल (Standard)	विदेशी शिक्षा 'बेन्टेक्स के आभूषणों' की भाँति है; देखने में 'स्टैण्डर्ड' (प्रदर्शन) पर संस्कार विहीन होने से मूल्यहीन है।
बोझ बनाम बोध	बस्ते का बोझ इतना अधिक है कि विद्यार्थी का 'बोध' (Enlightenment) दब गया है। बोझ देखकर बोध बुझ जाता है।
अनुशासन का अभाव	बिना अंकुश के हाथी, बिना लगाम के घोड़े और बिना ब्रेक की गाड़ी की तरह संस्कारहीन शिक्षा विनाशकारी है।

4. आचार्यश्री विद्यासागरजी का शैक्षणिक दर्शन

आचार्यश्री का दर्शन शिक्षा को 'पपड़ी जमे हुए गुंथे आटे' जैसी नीरसता से निकालकर जीवंत बनाने का आह्वान करता है।

- **परमार्थकारी विद्या बनाम अर्थकारी विद्या:** *विद्या अर्थकारी भले हो, लेकिन उसके मूल में परमार्थकारी होने का गुण होना चाहिए। अर्थ से केवल भौतिक सुख मिलता है, जबकि परमार्थ से ही शाश्वत शांति संभव है।*

- **शिक्षण में 'प्रयोग' (Experimentation) का महत्व:** *जैसे शिल्पी द्वारा ठोका-ठाकी किए बिना मृदंग से स्वर नहीं फूटते, वैसे ही प्रयोग के बिना शिक्षा निष्प्राण है। वर्तमान शिक्षा प्रयोगहीन होने से केवल बौद्धिक अजीर्ण पैदा कर रही है।*

- **श्रवण परंपरा और स्मृति संरक्षण:** *लिखने-पढ़ने से अधिक सुनने-सुनाने को मुख्य मानना चाहिए। बहुत अधिक पढ़ने से 'स्मृति ठंडी' (Memory cooling) हो जाती है, जबकि सुनने से एकाग्रता और स्मृति की तीक्ष्णता बढ़ती है।*

- **शिक्षक-छात्र संबंध:** *शिक्षक के भीतर विद्यार्थी की 'जिज्ञासा की भूख' जाग्रत करने की कला होनी चाहिए। जो सोया है उसे जगा दे, वही सच्ची शिक्षा है।*

5. मातृभाषा, संस्कृति और भाषाई विश्लेषण

आचार्यश्री ने मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अनिवार्य माना है। उन्होंने अंग्रेजी वर्णमाला के प्रतीकों के माध्यम से एक सूक्ष्म विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है:

- **'I' बनाम 'T' का भाषाई दर्शन:** अंग्रेजी का अक्षर 'I' एक खड़ी रेखा है जिसे ऊपर और नीचे से आड़ी रेखाओं द्वारा सीमित कर दिया गया है, जो संकुचित विकास और अहंकार का प्रतीक है। इसके विपरीत, 'T' अक्षर ऊपर से खुला और फैला हुआ है, जो स्थिरता और विस्तार (विशालता) को दर्शाता है। शिक्षा का उद्देश्य 'I' की तरह सीमित होना नहीं, बल्कि 'T' की तरह विस्तृत होना चाहिए।

- **मातृभाषा के महत्व के प्रमुख कारण:**
  - **सांस्कृतिक विस्मृति से बचाव:** अपनी भाषा छोड़ने से व्यक्ति अपने साहित्य और गौरवमयी संस्कृति से कट जाता है।
  - **मौलिक चिंतन:** विदेशी भाषा में चिंतन उधार का होता है, जबकि मातृभाषा में मौलिक 'भाव' प्रकट होते हैं।
  - **स्मृति की रक्षा:** ट्यूशन और विदेशी माध्यम के बोझ से स्मृति भंग हो रही है; मातृभाषा बुद्धि को 'खुश्क' होने से बचाती है।
  - **आत्मनिर्भरता (स्वदेशी):** विदेशी शिक्षा व्यक्ति को 'नौकरी' के लिए बेचती है, जबकि देशी शिक्षा उसे अपना 'आर्ट' (हुनर) तैयार कर स्वावलम्बी बनाने की शक्ति देती है।
  - **'इंडिया' नहीं, 'भारत' बोलो:** 'इंडिया' शब्द विदेशी गुलामी का प्रतीक है, जबकि 'भारत' हमारी प्राचीन संस्कृति का संवाहक है।

6. व्यावहारिक मॉडल: प्रतिभास्थली एवं अन्य स्वावलम्बी उपक्रम

आचार्यश्री ने केवल सिद्धांत ही नहीं दिए, अपितु उनके सफल क्रियान्वयन हेतु ठोस 'अहिंसक मॉडल' भी प्रस्तुत किए हैं:

- **प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ:** यह गुरुकुल पद्धति और आधुनिकता का संगम है। वर्तमान में इसके पांच प्रमुख केंद्र —जबलपुर, डोंगरगढ़, रामटेक, इंदौर और ललितपुर (पपौराजी से स्थानांतरित)—नारी शक्ति को संस्कारित कर रहे हैं।
- **अहिंसक हथकरघा केंद्र:** आचार्यश्री ने हथकरघा को पुनर्जीवन दिया क्योंकि आधुनिक पावरलूम में धागे की फिसलन रोकने के लिए 'मटन टैलो' (जानवरों की चर्बी) का प्रयोग किया जाता है। अतः मंदिर के वस्त्र और दैनिक परिधान पूर्णतः अहिंसक हों, इसलिए उन्होंने हाथ की कला को प्रोत्साहन दिया। इसका सफल प्रयोग बिहार जेल के कैदियों के जीवन परिवर्तन में देखा गया है।
- **दयोदय गौशाला:** इन्हें वे केवल पशु-आश्रय नहीं, अपितु अर्थशास्त्र, विज्ञान और आरोग्यशास्त्र का केंद्र मानते हैं। यहाँ 'धारा दुग्ध योजना' जैसे उपक्रमों के माध्यम से गौ-संसाधनों द्वारा पर्यावरण और स्वास्थ्य का संतुलन साधा जा रहा है।

7. निष्कर्ष: स्वर्णिम भारत के पुनर्निर्माण की राह

इस शोधपत्र का निष्कर्ष यह है कि यदि राष्ट्र को पुनः विश्वगुरु के पद पर आसीन होना है, तो हमें अपनी शिक्षा प्रणाली के अनुक्रम को बदलना होगा। प्राचीन परंपरा के अनुसार हमें **'शिक्षा काल' से पूर्व 'दीक्षा काल'** (संयम और अनुशासन का काल) को स्थान देना होगा। वर्तमान में हम पहले शिक्षित करते हैं और फिर अनुशासन सिखाने का प्रयास करते हैं, जो निष्फल रहता है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का आह्वान है कि शिक्षा में जब तक 'अहिंसा', 'मातृभाषा' और 'श्रम' का समावेश नहीं होगा, तब तक वास्तविक 'बोध' संभव नहीं है। 'इंडिया से भारत' की ओर लौटना ही स्वर्णिम भविष्य की एकमात्र और सुनिश्चित राह है।